भूमण्डलीकृत व्यवस्था से हिन्दी साहित्य में विकसित नव धारणाएँ

डॉ. विदुषी आमेटा – सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्ड़वाडा (राज.)

सारांश –

भूमण्डलीकृत व्यवस्था से बने विश्व गाँव का साहित्य परस्पर प्रभावित हो रहा है। साहित्य परिवर्तन का यह प्रभाव तीन आयामों में व्याप्त है–

1. विविध शास्त्रों व विषयों का साहित्य पर प्रभाव।
2. विविध भाषाओं एवं क्षेत्रों के साहित्य का किसी भाषा विशेष या क्षेत्र विशेष के साहित्य पर प्रभाव।
3. परिवर्तित संस्कृति का साहित्य पर प्रभाव

(1) कार्ल मार्क्स की द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद व साम्यवादी व्यवस्था व फ्रायड, युंग और एडलर मनोविश्लेषणवादी विचारधाराओं के साये में रचे गये हिन्दी साहित्य की शब्दावली व अभिव्यक्ति शैली पर संबंधित विचारों की प्रतिछाया दिखाई देती है।

(2) वर्तमान साहित्य में रूसी रूपवाद, नई समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, विखण्डनवाद जैसी शैली वैज्ञानिक अवधारणाओं का प्रभाव देखा जा रहा है। जहाँ शिल्पगत स्तर पर लेखकों ने नवीन प्रयोग अपनी रचनाओं में किये वहीं स्वतंत्रता के बाद बदली मानसिकता से हममें गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, बेरोजगारी जैसी समस्याओं के प्रति जागरुकता आई और कहानियों का विषय जीवन की वास्तविक समस्याओं से जुडने लगा।

(3) आज वैश्वीकरण के दौर में सभी उद्देश्यों में अर्थ पक्ष सबल हो गया और अन्य प्रयोजन महत्त्व खोते गये। अब साहित्य पर बाजारीकरण का प्रभाव पड़ रहा है। बाजारीकरण, उदारीकरण व भूमण्डलीकरण के कारण भारतीय समाज व संस्कृति में आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। पारिवारिक विघटन, दाम्पत्य संबंधों में दूरियाँ, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, कुंठित मनःस्थिति, विचारों में परिवर्तन, भोग की प्रधानता, सौंदर्य के बदलते प्रतिमान, और भाषा में बदलाव हमारे समय का यथार्थ बनते जा रहे हैं। इसका प्रभाव साहितय पर भी दिखाई दे रहा है।

वैश्वीकरण की प्रतिछाया ने हिन्दी साहित्य में बदलाव की हवा चलाई है। भाव, भाषा और शिल्प के स्तर पर नवीन प्रयोग हो रहे हैं।यथार्थ के प्रति विश्व दृष्टि का प्रादूर्भाव वैश्वीकरण की साहित्य को प्रमुख देन है।

भूमण्डलीकृत व्यवस्था से बने विश्व गाँव का साहित्य परस्पर प्रभावित हो रहा है। साहित्य परिवर्तन का यह प्रभाव तीन आयामों में व्याप्त है–

1. विविध शास्त्रों व विषयों का साहित्य पर प्रभाव।
2. विविध भाषाओं एवं क्षेत्रों के साहित्य का किसी भाषा विशेष या क्षेत्र विशेष के साहित्य पर प्रभाव।
3. परिवर्तित संस्कृति का साहित्य पर प्रभाव।

(1) प्राचीन काल से साहित्य को साहित्यिक प्रतिमानों के आधार पर रचा गया, देखा गया और समीक्षा की गई। संस्कृत साहित्य शास्त्री नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि से लेकर हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यों और कुछ परवर्ती हिन्दी समीक्षकों तक काव्य का काव्य के अवयवों के आधार पर ही परीक्षण किया जाता रहा। कालान्तर में यूरोपिय देशों की साम्राज्यवादी नीति के कारण विविध विचारधाराओं का प्रसारण हुआ, जो अद्यतन हो रहा है। कार्ल मार्क्स की द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद व साम्यवादी व्यवस्था की अवधारणा हिन्दी में प्रगतिवाद के रूप में सामने आई। शोषक का विरोध, शोषितों के प्रति सहानुभूति, क्रांति का आह्वान और समानता आधारित समाज व्यवस्था का समर्थन प्रगतिवादी साहित्य को मार्क्स की देन है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नागार्जुन, सुमित्रानंदन पंत, रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी कविता के माध्यम से मार्क्स के विचारों को वाणी दी है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ओजस्वी वाणी में कहते हैं–

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओं, जिससे उथल पुथल पच जाये।

एक लहर इधर से आए, एक लहर उधर से आए।

इस प्रकार अपने शब्दों से कविता द्वारा क्रांति का बिगुल बजाने पर ऐसा लगता है कि मार्क्स नारा दे रहे हैं– ''दुनिया के मजदूरों एक हो जाओं, पाने के लिए सारी दुनिया है और खोने के लिए कुछ नहीं।'' निराला की भिक्षुक, बादल राग, वह तोडती पत्थर, पंत की ताज और दिनकर का कुरुक्षेत्र मार्क्स के विचारों की प्रतिध्वनि है।

फ्रायड, युंग और एडलर मनोविश्लेषणवादी है। अज्ञेय व इलाचंद्र जोशी के कथा साहित्य में फ्रायड की मान्यताओं का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। 'शेखर एक जीवनी' का केन्द्रीय चरित्र शेखर फ्रायड की काम भावना से ग्रस्त है। इडिपस ग्रंथि की प्रधानता से उसका व्यक्तित्व निर्मीत हुआ ळें राजनीति शास्त्र व मनोविज्ञान की विचारधाराओं के साये में रचे गये हिन्दी साहित्य की शब्दावली व अभिव्यक्ति शैली पर भी संबंधित विचारों की प्रतिछाया दिखाई देती है।

(2) साहित्य की अवधारणाएँ देश काल के अनुरूप स्वरूप लेती रही हैं। भारतीय साहित्य शास्त्रियों ने प्राचीन एवं तात्कालिक संस्कृत साहित्य के अनुरूप काव्य मान्यताओं का विवेचन किया। भरतमुनि का रस सिद्धान्त, भामह का अलंकार सिद्धान्त, वामन का रीति सिद्धान्त, कुंतक का वक्रोक्ति सिद्धान्त, आनंदवर्धन का ध्वनि सिद्धान्त और क्षेमेन्द्र का औचित्य सिद्धान्त साहित्य के भाव और कला पक्ष का लेखा–जोखा प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रकार पाश्चात्य साहित्य में प्लेटो व अरस्तु का अनुकरण सिद्धान्त, अरस्तु का विरेचन सिद्धान्त, क्रोंचे का अभिव्यंजनावाद, टी. एस. इलियट का निर्वैयक्तिकता सिद्धान्त, आई. ए. रिचर्ड्स का का मूल्य संप्रेषण सिद्धान्त, कॉलरिज की कल्पना और फैंसी तथा वर्ड्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त चर्चित रहे हैं।

वर्तमान साहित्य में रूसी रूपवाद से प्रभावित होकर शैली वैज्ञानिक अवधारणाएँ विकसित हो रही है। नई समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद आदि रूसी रूपवाद से विकसित साहित्य समीक्षा के विविध रूप हैं। फ्रांसीसी कवि स्टीफन मलार्मे, मैकलीश, आन्द्रे बेतां, अंग्रेजी कवि इलियट, अमेरिकन साहित्यकार जानबार्थ, के. डिक तथा रूसी साहित्यकार स्टुरगारस्की बंधुओं के लेखन में संरचनावादी प्रवृत्ति दिखाई देती है। हिन्दी साहित्य में डॉ. नामवरसिंह की समीक्षा कृति 'कविता के नए प्रतिमान' पर भी रूसी रूपवाद एवं संरचनावाद का प्रभाव परिलक्षित होता है।

आठवें दशक में फ्रांस में उत्तर संरचनावाद का विकास होने लगा। भूमण्डलीकरण की प्रवृत्ति से संपूर्ण विश्व में साहित्य आलोचना के क्षेत्र में इसकी जड़ें फैल रही हैं। भाषाविद सस्यूर की विचारधारा के अनुरूप पाठ की संरचना के आधार पर कृति की पड़ताल की जाने लगी। प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात साहित्य में प्राचीन शास्त्रीयतावादी धारा की प्रतिक्रिया में नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों के आलोक में वर्तमान की व्याख्या की जाने लगी। दो विश्वयुद्धों की विभीषिका ने समाज की परम्परावादी सोच पर प्रश्नचिह्न लगाए। नई मान्यताओं व संवेदनाओं का प्रतिफलन साहित्य में कथ्य और शिल्प के स्तर पर दिखाई देने लगा, जिसे आधुनिकतावाद की संज्ञा से अभिहित किया गया। सर्वप्रथम अज्ञेय के उपन्यास शेखर एक जीवनी में परम्परागत नैतिक मूल्यों को बौद्धिकता के धरातल पर कसकर समाप्त किया गया है। संपूर्ण प्रयोगवादी काव्यधारा में परिलक्षित मानव स्वातंत्र्य, व्यक्ति चेतना, अस्तित्वाद व अहंनिष्ठ भावनाएँ आधुनिकतावाद का परिणाम है।

आधुनिकता की अतिशयता से वितृष्णा और नकार के भाव पनपने लगे। आधुनिकता और विज्ञान के अतिशय विकास ने कुछ अमानवीय विचारों को जन्म दिया। आधुनिकता का चरमोत्कर्ष तकनीकि प्रौद्योगिकी, सूचना विस्फोट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि के विकास में परिलक्षित हो रहा है। आधुनिकता की झोंक व मशीनीकरण की प्रक्रिया ने मानव को यंत्र बना दिया है। आधुनिकता के इस चरमोत्कर्ष का निषेध करते हुए उत्तर आधुनिकता का प्रवर्तन हुआ है।

सर्वप्रथम जानबार्थ ने 1967 में कला के संदर्भ में उत्तर आधुनिकता पदबंध का प्रयोग किया। तत्पश्चात ल्योतार ने अपनी रचना 'The Post Modern Condition- A Report on Knowledge' तथा फ्रेडरिक जेमसन ने 'Post Modernism- The Cultural Logic of The Capitalism' रचना से उत्तर आधुनिकता का विकास किया। उत्तर आधुनिकता प्राचीन पौराणिक वृतांतों एवं मूल्यों को नकारते हुए मुल्यहीनता की पक्षधर है। यह व्यक्ति केन्द्रित दृष्टि है जिसमें परम्परावादी समीक्षा सिद्धांतों का अतिक्रमण है। हिन्दी साहित्य में मनोहर श्याम जोशी के उपन्यस 'कुरु कुरु स्वाहा' और उदयप्रकाश की कहानी 'वारेन हेस्टिंग्स का

साँड' में सर्वप्रथम उत्तर आधुनिकता की अनुगूँज सुनाई दी। रमेश चंद्र शाह का 'पुर्नवास' उपन्यास भी उत्तर आधुनिकता से प्रभावित है।

नई समीक्षा जहाँ कृति की अखण्डता व अन्तः संबंधों की खोज पर बल देती थी वहीं कालान्तर में कृति की अखण्डता को खण्डित कर उपपाठों के रूप में देखने की प्रवृत्ति उभरी, जिसे विखण्डन की संज्ञा दी गई। जॉन देरिदा विखण्डन के समर्थक रहे हैं। विखण्डनवाद साहित्य और समीक्षा में अंतर नहीं करता और कृतिकार की भाषा को समीक्षक की भाषा से उच्चकोटि का नहीं स्वीकारता। देरिदा ने अपनी पुस्तक 'ऑफ ग्रामोटोलॉजी' में स्पष्ट किया है कि लेखक अर्थ के अनुरूप शब्द का चयन करता है। अतः अर्थ की स्थिति पहले व शब्द की बाद की है। जबकि अधिकांश विचारक इससे विपरीत विचार रखते हुए शब्द को पूर्व व अर्थ को पश्चात स्वीकारते हैं। यह विचारधारा साहित्य के अनेकार्थ में विश्वास रखती है। विखण्डन परम्परावादी पाश्चात्य दर्शन या विचारधारा का निषेध करता है। यह विचारधारा साहित्य व समीक्षा में कोई भेद स्वीकार नहीं करती क्योंकि कृतिकार की भाँति समीक्षक भी स्वयं अपनी भाषा का निर्माता होता है। हिन्दी साहित्य में भी वर्तमान समीक्षा कृति को भिन्न दृष्टिकोणों से परखने–विश्लेषित करने पर जोर देती है, जिसे विखण्डनवाद का प्रभाव कहा जा सकता है।

शिल्पगत स्तर पर लेखकों ने नवीन प्रयोग अपनी रचनाओं में किये हैं। जैसे उपन्यास साहित्य में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने 'सोया हुआ जल' में सिनेरियो टेक्नीक का प्रयोग किया है। बदी उज्जमा ने 'एक चूहे की मौत में' फैण्टेसी का, राहुल सांकृत्यायन ने 'बाईसवीं सदी' में यूटोपिया का, मनोहर श्याम जोशी ने 'कुरु कुरु स्वाहा' में प्रतीक एवं बिम्ब शैली का, श्रीलाल शुक्ल ने 'राग दरबारी' में व्यंग्य प्रधान भाषा, हरिशंकर परसाई ने 'रानी नागफनी की कहानी' में व्यंग्य का नरेन्द्र कोहली ने 'दीक्षा' में प्राचीन आख्यानों की नवीन व्याख्या रूप शैली का प्रयोग किया है। इसी प्रकार कहानी साहित्य में भी विषय की विविधता के साथ शिल्पगत स्तर पर नवीन प्रयोग दिखाई देता है। स्वतंत्रता के बाद बदली मानसिकता से हममें गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, बेरोजगारी जैसी समस्याओं के प्रति जागरुकता आई और कहानियों का विषय जीवन की वास्तविक समस्याओं से जुडने लगा।

(3) प्राचीनकाल से भारतीय साहित्य में 'धर्मार्थकाममोक्ष' चतुर्विध प्रयोजन को साहित्य का मूल उद्देश्य स्वीकार किया गया है। आज वैश्वीकरण के दौर में सभी उद्देश्यों में अर्थ पक्ष सबल हो गया और अन्य प्रयोजन महत्त्व खोते गये। अब साहित्य पर बाजारीकरण का प्रभाव पड़ रहा है। बाजारीकरण, उदारीकरण व भूमण्डलीकरण के कारण भारतीय समाज व संस्कृति में आमूलचूल परिवर्तन हो रहे हैं। पारिवारिक विघटन, दाम्पत्य संबंधों में दूरियाँ, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, कुंठित मनःस्थिति, विचारों में परिवर्तन, भोग की प्रधानता, सौंदर्य के बदलते प्रतिमान, और भाषा में बदलाव हमारे समय का यथार्थ बनते जा रहे हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव हमारे साहित्य पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। मन्नू भण्डारी के उपन्यासों व कहानियों में पारिवारिक विघटन व इस विघटन के कारण उपजी मनःस्थितियों का विस्तृत वर्णन है। 'आपका बंटी' पारिवारिक विघटन के कारण बच्चों की यथार्थ सिथिति का चित्रण करता है। राजेन्द्र यादव एवं मन्नू भण्डारी का संयुक्त प्रयास 'एक इंच मुस्कान' वर्तमान समय में स्त्री–पुरुष मानसिकता को उजागर करने वाला विशिष्ट उपन्यास है। सुरेन्द्र वर्मा का उपन्यास 'मुझे चाँद चाहिए' व चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'एक जमीन अपनी' ग्लैमर की चकाचौंध भरी दुनिया में डूबे स्त्री जीवन की समस्याओं और भटकाव का चित्रण करते हैं। धर्मवीर भारती कृत 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' और कमलेश्वर कृत 'कितने पाकिस्तान' इतिहास की घटनाओं को वर्तमान दृष्टिकोण से परखकर नए प्रश्न पैदा करते हैं।

उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, शिवानी, मेहरुन्निसा परवेज एवं रजनी परिकर जैसी लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में पति–पत्नी एवं नारी–पुरुष संबंधों को प्रमुखता से अभिव्यक्ति दी है। कमलेश्वर की बयान, राजा निरबंसिया, राजेन्द्र यादव की टूटना, मन्नू भण्डारी की यही सच है और मोहन राकेश की अपरिचित कहानियाँ प्रेम और विवाह के कटु मधुर संबंधों का चित्रण करती हैं तो मोहन राकेश की मिस पाल, कमलेश्वर की तलाश, उषा प्रियंवदा की छुट्टी का एक दिन और अमरकांत की जिंदगी और जोंक कहानियाँ टूटे हुए पुरुष या टूटी हुई स्त्री का चित्रण है।

आज साहित्य में विमर्श के नए आयाम विकसित हो रहे हैं। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श जैसे विमर्शों की बाढ़ आ गई है। स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई है। मैत्रेयी पुष्पा ने प्राचीन समय से चली आ रही नारी की स्थिति को 'बेतवा बहती रही' कहानी में स्पष्ट किया है– ''विभिन्न मानसिकता के दुमुँहे समाज में आज की नारी मात्र वस्तु , मात्र सम्पत्ति, विनिमय की चीज है।'' और इस कहानी का विरोध करते हुए रामदरश मिश्र की कहानी 'थकी हुई सुबह' की लक्ष्मी कहती है– ''क्या स्त्रियों को कोई दूसरा पैदा ईश्वर पैदा करता है या यहाँ स्त्री पुरुष के लिए दो नियम है।'' आज की नारी का आत्माभिमान चित्रा मुद्गल के उपन्यास 'एक जमीन अपनी' की नायिका अंकिता सुधांशु के शब्दों से झलकता है– ''औरत बोनसाई का पौधा नहीं है, जब जी चाहे उसकी जड़ें काटकर, उसे वापस गमले में रौंप लिया। वह बौना बनाए रखने की इस साजिश को अस्वीकार कर सकती है।'' कवयित्री अनामिका नारी के प्रति सचेतन दृष्टि से कहती है–

''हम भी इंसान हैं– हमें कायदे से पढ़ों एक एक अक्षर

जैसे पढ़ा होगा बी. ए. के बाद, नौकरी का पहला विज्ञापन।''

(खुरदरी हथेलियाँ, पृ. 13)

इसी प्रकार दलित लेखन भी वर्तमान साहित्य में बहुत चर्चित रहा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा जूठन, तुलसीदास का मुर्दहिया उपन्यास जैसी रचनाएँ उसका उत्कृष्ट उदाहरण है। निर्मला पुतुल, गंगासहाय मीणा जैसे लेखक आदिवासी जीवन की समस्याओं पर कलम चला रहे हैं तो यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ने नटों के जीवन को आधार बनाकर 'ढोलन कुंजकली' उपन्यास लिखा। लेकिन विमर्श के नाम पर रचे गये इस साहित्य संसार की हकीकत अनामिका की कविता से स्पष्ट होती है–

''जिनके लिए लिखी जाती हैं कविताएँ– वे उनको समझते हैं बस इतना

जितना समझते हैं बंगाली मलयालम, या मलयाली बंगला।''

(खुरदरी हथेलियाँ, पृ. 183)

स्पष्टतः साहित्य पर वैश्वीकरण की प्रतिछाया आज या कल की बात नहीं है अपितु यह कुछ वर्षों से सतत चली आ रही प्रक्रिया है जिसने हिन्दी साहित्य में बदलाव की हवा चलाई है। भाव, भाषा और शिल्प के स्तर पर नवीन प्रयोग हो रहे हैं। साहित्य सैद्धान्तिकता के स्थान पर व्यावहारिकता की ओर झुकने लगा है। साहित्य का मानव मन और धरातल से जुड़ाव बढ़ने लगा है। वसुधैव कुटुम्बकम का विश्व भाव भारतीय साहित्य में पुराकाल से विद्यमान था। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से स्थानीय समस्याओं के प्रति सचेतनता आई। दूसरे शब्दों में, यथार्थ के प्रति विश्व दृष्टि का प्रादूर्भाव वैश्वीकरण की साहित्य को प्रमुख देन है।

संदर्भ सूची :

1. खुरदरी हथेलियाँ–अनामिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. एक जमीन अपनी–चित्रा मुद्गल, मयूर पेपर बैक्स
3. जूठन–ओमप्रकाश वाल्मीकि
4. मुर्दहिया–तुजसीदास
5. मुझे चाँद चाहिए–सुरेश वर्मा
6. एक चूहे की मौत–बदीउज्जमा
7. आपका बंटी–चित्रा मुद्गल
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ. नगेन्द्र
9. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र–डॉ. भगीरथ मिश्र
10. साहित्य शास्त्र–शर्मा एवं पण्ड्या, हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर